

A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 27 Subject Grammar

Name of MSS Grammar (Vyakarana)

Author —

Period Not Available Folios 28 (Incomplete & Damage)

Script Sanskrit Source M/S Prithipal Singh

Missing Folios CC-0 Punjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharara Initiative

॥ ६ ॥ ३० ॥ यतो प्रयत्ने यतते येतो ॥ ३० ॥ युतृ जुतृ भासने यो तते ॥ युयुते ॥ जो तते ॥ जुजुते ॥ ३१ ॥ विष्ट वेष्ट याचने ॥ वि
 स्मृष्ट वेष्ट ॥ ३५ ॥ अथि शौथिल्ये ॥ अथते ॥ ३६ ॥ याथि कौटिल्ये ॥ यथते ॥ ३७ ॥ कथ्य स्वाचायां ॥ कथ्यते ॥ ३८ ॥
 शिष्टानुदात्ते तो गताः ॥ अथाष्टात्रिंशत्तवर्गीयांताः परस्मैपदिनः ॥ अतसा तत्पगमने ॥ अत आदेः ॥ आत
 ७७ ॥ आतुः ॥ लुङि आति मूर्द्धादिति स्थिते ॥ इट ईटि ॥ इटः परस्मैपदलोपः स्यादीटि परे ॥ सिज्जो पर
 मेचने होवाच्यः ॥ आतीत् ॥ आतिष्टां ॥ आतिष्ठुः ॥ वदेव्रजेर्हलंतस्य च ॥ वदेव्रजेर्हलंतस्य चांगस्य च ॥
 कसं स्यात्सिचिपरस्मैपदेषु ॥ इति प्राप्ते ॥ नेटि ॥ इज्जदौ सिचि प्रागुक्तं न स्यात् ॥ मा भवानतीत् ॥ अति
 ७८ ॥ अति ॥ ३९ ॥ चिती संज्ञाने ॥ चेतति ॥ चिचेत् ॥ अचेतीत् ॥ अचेतिष्टां ॥ अचेतिष्ठुः ॥ ४० ॥ अतिरूपा मेच
 ७९ ॥ अतर्म करणं ॥ आजीषर्थमिव्याप्तौ च ॥ इर इत्संज्ञावाच्या ॥ च्योतति ॥ चुच्योत ॥ इरितोवा ॥ इरितो
 ८० ॥ अच्योत ॥ स्यात्परस्मैपदेषु ॥ अच्युतत् ॥ अच्योतीत् ॥ ४१ ॥ अतिरूपा रणे ॥ अच्योतति ॥ चुच्योत ॥ अच्यु
 ८२ ॥ अच्योत ॥ यकाररहितोप्यं ॥ अच्योतति ॥ ४२ ॥ मन्थ विलो जने ॥ यासु इकिदाशिषीति कित्वा दानि

१३। स्पदि किं चि चूलने। स्पंदने। प्रस्पंदे। १४। किं हि प्रि
 १५। मुदत्तर्षे। मोदते। १६। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 १७। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 १८। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 १९। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २०। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २१। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २२। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २३। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २४। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २५। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २६। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २७। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २८। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 २९। दद दाने। ददते। न प्रामदद
 ३०। दद दाने। ददते। न प्रामदद

॥६६॥ लिः शेष इत्यस्यापवादः ॥ पस्पर्धे ॥ स्पर्धता ॥ स्पर्धिष्यते ॥ स्पर्धतां ॥ अस्पर्धता ॥ स्पर्धेत ॥ स्पर्धिषीष्ट ॥ अस्पर्-
 स्मः ॥ नस्पर्धिष्यत ॥ ३॥ गाधृप्रतिष्ठा लिस्मयो र्ये च ॥ गाधते ॥ जगाधे ॥ ४॥ चाधृलो जने ॥ लो जने प्रतिष्ठा
 दि कलि ॥ नाधृना धृया न्यो पता पैर्ध्या शीः पु ॥ आशिषिना य इति वाच्यं ॥ अ ॥ आशिषे वात्मनेपदं स्यात् ॥ ना
 ४॥ पु न्ध्वा ध्याति ॥ नाधते ॥ ५॥ दधधारेणे ॥ दधते ॥ ६॥ अत एकहल्मध्येनादेशादेलिटि ॥ लि ए नि मि त्ता देशादिकं
 मेचने ॥ तत्तदवयवस्य संयुक्तहल्मध्ये स्थस्याकारस्य एकारः स्यादम्पासलोपश्च किनिलिटि ॥ घालिचसे
 कसंघाते ॥ आदेशश्चेहवै रूपसंपादक एवास्तीयते ॥ शामिदद्योः प्रतिषेधवचनाद्वापकात् ॥ तेन प्रक-
 ष्योक्ते ॥ अतः पिबन्नाभ्यासलोपोस्त एवादेशे ॥ देधाते ॥ देधिरे ॥ अतः किं ॥ दिदिवतुः ॥ तपरः किं ॥ रासे ॥ ए-
 त्पादि ॥ तत्तरतुः ॥ अनादेशादेः किं ॥ चकणतुः ॥ लिट् आदेशविशेषणादित् स्यादेव ॥ नेमिद्य ॥ मेहे ॥ स्कु-
 त्प्रवरणे ॥ अ ॥ प्रवरणमुत्प्रवनमुद्धरणं च ॥ इदितो नुर्धातोः ॥ स्कुदते ॥ चुस्कुदे ॥ ७॥ चिदिच्चैत्ये ॥ अक-
 षिदते ॥ प्रीप्थिदे ॥ १०॥ वदि अभिवादनस्तुत्योः ॥ बंदते ॥ बबंदे ॥ ११॥ भादिकल्पाणे सुरवेच ॥ भंदते ॥ ब

लिटि ३
 नः ४३
 नीयम्

जिह्वा संजि संज मजः ॥२॥ अइ इइ रवि इइ चिनुदिनुदः ॥ पद्यमिदु विद्यति विनइ ॥ प्रदमदी खि
 क्कदिहदी कुधुक्क धिवुध्पती ॥३॥ बंधिरुंधिरु धीरा धिव्यधुधुधः सोधिसिध्पती ॥ मन्यहन्ना प्रदी
 पितप्रतिपत्तपतिहप्पती ॥४॥ लिप्रलुप्रवप्रप्राप्रस्वप्रस्रपियंभ्रभ्रभाम्नम्यमोरामिः ॥ कुशीर्हेशि
 जीरुभ्रम्राधिष्ठास्तिश्राविश्रस्मृश्राः कृषिः ॥५॥ विष्रनुष्रदिष्रपुष्पपिष्रविष्र ॥ शिष्रशुष्रास्तिष्पत ॥ ५४
 मनिर्हददिहिदुहो ॥ नलिहुरुहलिहवहिस्रथा ॥६॥ अनुदात्ताहलंनेषुधातवोऽधकंश
 भेदेनास्थितौ यौचुरादिषु ॥७॥ नृपृहपीनौ वारयितुं प्रपनानिर्देशाद्वाहतः ॥ किंच ॥ स्विद्यप
 मन्पुष्पास्तिषः प्रपना ॥ वसिः शर्पात्तुका यौतिर्निर्दिष्टो न्यनिवृत्तये ॥ निजिरूविजिरूशक्तुइ
 मीतथा ॥ विदतिश्चाइदौर्गादेरिहो भाष्येपि दृश्यते ॥ व्याघ्रभूत्यादयस्त्वेनं नेहपेठुरिति स्थितं ॥
 पदीनुइ इधुधुधुषिपुपीशिषिः ॥ भाष्यानुक्ता नवेहोक्ता व्याघ्रभूत्यादि संमतेः ॥ स्पर्द्धसंघर्षे सं
 भवेच्छा ॥ धात्वर्थेनोपसंयहादकर्मकः ॥ स्पर्द्धते ॥ शर्पूर्वाः रवयः ॥ अभ्यासस्पशार्पूर्वाः स्वयः शि

ॐ वरुण

७/४/६९

॥ इह गिरिदुत्साया ॥ निन्दति ॥ प्रणिन्दति ॥ ६० ॥ हुनदि सम्भू ॥ आदिर्निहृजवः ॥ उपदेशो धातो राद्या एते इतः
 स्मृः ॥ नन्दति ॥ इदित्वा नलोपो नानद्यात् ॥ ६१ ॥ चदि आह्लादे ॥ चचंद ॥ ६२ ॥ चदि चेष्टायां ॥ तत्र च ॥ ६० ॥ क
 दि कृदि कृदि आह्लादे रोदने च ॥ कच ॥ ६१ ॥ चक्रंद ॥ ६२ ॥ चक्रंद ॥ ६३ ॥ क्तिदि परिदेवने ॥ चिल्लिन्द ॥ ६
 ४ ॥ सुन्धसुद्धौ ॥ सुसुन्ध ॥ नलोपः ॥ सुधात् ॥ ६५ ॥ अथ कवर्गीयांता अनुदात्ते तो द्विचत्वारिंशत् ॥ श्रीक
 मेचने ॥ तालव्यादिः ॥ दंत्यादिरित्येके ॥ शीकते ॥ शीशीके ॥ ६६ ॥ लोहदर्शने ॥ लोकते ॥ लुलोके ॥ ६७ ॥ श्लो
 हसंघाते ॥ संघातोयंथः ॥ सचेत्यथ्यमानस्य व्यापारो ग्रंथितुर्वी ॥ आद्येऽकर्मको द्वितीये सकर्मकः ॥
 श्लोकते ॥ ६८ ॥ देहधुहशब्दोत्साहयोः ॥ उत्साहो हृदि रौद्रत्पंच ॥ दिडेके ॥ दिध्वेके ॥ ६९ ॥ रेहशंकायां
 रेकते ॥ ७० ॥ सेहसेहस्वकिश्चकिश्चकिगतौ ॥ त्रयोदंत्पादयः ॥ द्वौ तालव्यादी ॥ अषोपदेशात्वा न्नषः ॥
 सिसेके ॥ ७१ ॥ शकिशंकायां ॥ शङ्कते ॥ ७२ ॥ अकिलक्षणे ॥ अङ्कते ॥ आनङ्के ॥ ७३ ॥ वकि कौदित्ये ॥ वं
 कते ॥ ७४ ॥ माकि मण्डने ॥ मंकते ॥ ७५ ॥ ककलौत्ये ॥ लौत्यंगवश्चापलंच ॥ ककते ॥ चकके ॥ ७६ ॥ कुकटक

विलेखनं भेदनम्

६१।६५

रादिषु परेषु। प्राणि गदति। रद विलेखने। रगद। ५३। एदञ्च व्यक्तेशा हे। एणेनः। धातो रदिर्ण स्पनः स्यात्। एणे
पदेशास्त्वनर्द्धादिनायाध्वजकनृत्तः। नृदेर्हीर्धोर्हस्पपर्युदासादुदादिर्णोपदेशाएव। नवर्गचतुर्थीतना
धतेर्नृनद्योश्चुकेचिलोपदेशात्माहुः। ६४। उपसर्गसमासेः। पिणोपदेशास्प। उपसर्गस्थानिमित्तात्परस्यणो
पदेशास्पधातोर्जस्पणः स्यात्समासेः समासेपि। प्राण दति। प्राणि नहति। ५४। अर्द्धगतौ याचनेचाञ्चन
आदेः। तस्माच्चुर्द्धिहलः। द्विहलोधातोर्हीर्धोभूतादकारात्परस्य नुट् स्यात्। आनर्ह। आर्हीत्। ५५। नर्द
गर्दशहे। एणेपदेशात्वाभावान्नणः। प्रनर्दति। गर्दति। जगर्द। ५६। नर्दहिंसायां। नर्दति। ५७। कर्दकुत्सिते
शहे। कुत्सितेकोहो। कर्दति। ५८। रवर्ददंष्ट्रके। दंष्ट्राहिंसादिरूपायां दंष्ट्रकक्रियायामित्यर्थः। रव
र्दति। चरवर्द। ६०। अतिअदिबंधने। अतति। आनंत। अंदति। आनंद। ६२। इदिपरमैश्वर्ये। इंदति। इंदं
चकार। ६३। विदिअवयवे। पवर्गानृतीयादिः। विंदति। अवयवं करोतीत्यर्थः। ६४। भिदीतिपाठांतरं।
६५। गजिबदनैकदेशे। गजति। अंत्यादयः पंचैतेनतिष्ठिषया इति काश्वपः। अन्येतुतिजमपीच्छति

त

६४/७८। लोकोत्पत्तिः

तृतीयोत्पत्तिः दश। इह रंतेषु रिख चरव विरिवा शिखि इत्यपि किंचित्पठेति। अभासम्पाः सवर्णोः। अतुरः।
भासम्पा इवर्णो वर्णयो रिख इवर्णोः सवर्णोः च। उवोरवा सचिपात परिभाषया इजादे रि त्पा म्ना। उ
रवतुः। ऊरवतुः। इह सवर्णो दीर्घस्माभास अहणेन अहणा इवः प्राप्तेन भवति। सकृत्प्रवृत्तत्वात्। अंग
त्वादिपञ्चन्यवल्लक्षणप्रवृत्त्या इवैकतेततो दीर्घः। वर्णादांगं बलीय इति न्यायात्परत्वाच्च। उरवति।
ववरवतुः। वंरवति। मेरवतुः। त्वगि कं पने। १६१। युगि जुगि वर्जने। युगति। १६४। घघतमने। जघाघ। १६५।
माघि मेजने। १६६। शिखि आघाणे। शिघति। १६७। अथ चवर्गीयाः। तत्रानुदात्तेन एकविंशतिः। वर्च
दीप्ते। १६८। षच मेचने मेवने च। मचते। मेचे। मचिता। १६९। लोचद र्शने। लोचते। लुलोचे। १७०। श
चय क्ताया वाचि। शेचे। १७१। श्वच श्वचिगतौ। श्वचते। श्वचते। १७३। कच बंधने। कचते। १७४। कचिका
चिदीप्तिबंधनयोः। चकंचे। चकांचे। मच मुचि कल्कने। कल्कनंदं भः शाठ्यं च। कथनमित्यन्ये। मेचे।
मुमुंचे। मचिधारणे च्छायपूजननेषु। ममंचे। पचि व्यक्तीकरणे। पंचते। १७०। एव प्रसादे। स्तोचते। तुष्टुचे।

लोल
चालुक
देवप्रका
ने
बुगि ५

१२

अनुपधमोतिः किं त्वं गुणतूर्वविप्रतिषेधेन २

च। नि। क। क। तो। चु। कु। के। वर्क। ते। बह। के। १६३। चक। तृ। त्रौ। प्रती। घ। ते। च। चक। ते। चे। के। १६४। ककि। वा। कि। स्र। कि। व्र। कि। टो। क
तौ। कृ। षु। षु। क। वर। क। मर। क। टि। क। टी। क। ति। कृ। ती। कृ। रा। धि। ला। धि। ग। त्प। र्थाः। कं। क। ते। डु। टौ। के। तु। त्रौ। के। सु। द्धा। तु। धि। वृ। षु। कृ। ती
गं। स। त्व। प्र। ति। षे। धो। व। कृ। त्प। र्थाः। षु। कृ। ते। षु। षु। के। अत्र। तृ। ती। यं। दं। त्प। दि। मे। के। ता। धि। भो। ज। न। नि। वृ। त्ता। वा। पि। १०९। अ। धि
व। धि। मा। धि। ग। त्प। र्थाः। हे। पे। आ। हे। पो। निं। दा। ग। तौ। ग। त्प। रं। भे। चे। त्प। नो। अं। घ। तो। वं। घृ। ते। मं। घृ। ते। म। धि। कै। त। वे। च। ११०। रा
धृ। ला। धृ। रा। धृ। सा। म। र्थे। रां। घ। ते। धा। धृ। इ। त्प। पि। के। चि। त्। इ। धृ। आ। या। मे। च। ११६। स्म। धृ। क। त्प। ने। स्म। धृ। ते। ११७।
अथ। पर। त्पे। प। दि। नः। पं। चा। श। त्। फ। कृ। नी। चै। र्गी। तौ। नी। चै। र्गी। ति। र्मे। द। ग। म। नं। स्र। स। द्धा। व। हा। र। स्र। फ। कृ। ति। ११८। त। क
ह। स। ने। त। क। ति। ११९। ता। किं। कृ। षु। जी। व। ने। तं। क। ति। १२०। बु। कृ। भ। ष। णे। भ। ष। णं। श्व। र। वः। बु। कृ। ति। १२१। क। र। व
ह। स। ने। प्र। ति। क। र। व। ति। १२२। ओ। र। ह। र। र। ह। ला। र। ह। ड। र। हृ। धा। र। हृ। शो। ष। ण। ल। म। र्थे। योः। १२७। शा। र। हृ। स्म। र। हृ। व्या
त्रौ। शा। स्र। ति। १२९। उ। र। व। उ। र। वि। व। र। व। वा। र। वि। म। र। व। म। र। वि। ए। र। व। ए। र। वि। र। व। र। वि। ल। र। व। ल। र। वि। ड। र। व। ड। र। वि। ई
र। व। व। ला। र। गि। ल। र। गि। अ। गि। व। गि। म। गि। ता। गि। वृ। गि। श्व। गि। श्व। गि। इ। गि। रि। गि। लि। गि। गि। त्प। र्थाः। ॥ द्वि। ती। यां। ताः। पंच। दश।

कवर्गी

आनंते ४

आवामो

दैर्घ्यम्

११७

॥ अत आदे इत्यनेनाभ्युदीर्घः ॥

केशदे। गुजति। गुज्यात्। २०६। अर्च पूजायां च। आर्चनार्च। २०७। स्नेह अयत्ने शब्दे। अस्फुटे अपवादे चेत्पर्यः स्निह
ति। मिह्रे च। २०८। ल लला च। लल्लणे। लल्ल। लल्ल। २०९। वाचि इच्छायां। वाचति। आच्छि आयामे। अत आदे
रित्यत्र परकरणं स्वाभाविकं स्वपरिग्रहार्थं। तेन दीर्घाभावाच्च नुह। आच्छ। तपरकरणं। मुखसुखार्थमि
ति मते तु नुह। आनां छ। दीर्घलुजायां। जिह्वा छ। कौटिल्ये। कौटिल्यमपसरणमिति मैत्रेयः। उपधा
यांचेति दीर्घः। हर्षति। मुर्च्छा मोहसमुद्राययोः। मूर्च्छति। स्फूर्च्छा विस्तृतौ। स्फूर्च्छति। युच्छ प्रमादे। युच्छति। उच्छि
उच्छे। उच्छः कण शस्त्रादाने कण शस्त्रार्जनं शीलमिति यादवः। उच्छति। उच्छां चकार। उच्छी विवासे। विवा
सः समाप्तिः। प्रायेण यवि पूर्वः। व्युच्छति। ध्वज ध्वजि ध्वज ध्वजि ध्वज ध्वजि गतौ। ध्वजति। ध्वंजति। ध्वंजति। ध्वंज
ति। ध्वजति। ध्वंजति। कूज अयत्ने शब्दे। चुकूज। अर्ज षर्ज अर्जने। अर्जति। आनर्ज। मर्जति। समर्ज। गर्ज
शब्दे। गर्जति। तर्ज भर्त्सने। तर्जति। कर्ज व्यथने। खर्ज पूजने च। चर्कर्ज। चर्खर्ज। अज गति द्वेपयोः। अज
जति। अजे व्यघजपोः। अज तेर्वी इत्ययमादेशः स्याद्दर्द धातु कविषये घज मपंचवर्जयित्वा। वलादावा

२१४।५६।

१८१। अजगतिस्थानां नोपार्जनेषु। अर्जते। नुद्धि धौ चकारैकदेशो रेफो हत्वेन गृह्यते। तेनादित्वात्
नुद्। आनृजे। १८२। अर्जिभू जी भूर्जने। अर्जते उपसर्गादतीति वृद्धिः। पार्जते। अर्जां चके। आर्जिष्ण।
भर्जते। वभर्जे। अभर्जिष्ण। १८४। एजं भ्राजू दीप्तौ। एजां चके। १८५। ईजगतिकुत्मनयोः। ईजां चके। १८६। अथ
द्विसप्ततिर्व्रज्यन्ताः परस्मैपदिनः। शुच कैंशौ। शोचति। १८७। कुच शहेतोर। कोचति। १८८। कुञ्च कुञ्च कौटि
ल्यालपीभावयोः। अनिदितामिति नलोपः। कुच्यात्। कुञ्यात्। १८९। लुञ्च अपनयने। १९०। अञ्जुगति
प्रजनयोः। अच्यात्। गतौ लोपः। प्रजायां तु अंच्यात्। १९१। वंचु चंचु तंचु त्वंचु मुंचु म्लुंचु सुचु स्त्रुचु गात्यर्थः।
वच्यात्। चच्यात्। तच्यात्। त्वच्यात्। अमुंचीत्। अम्लुंचीत्। २००। ज्हरे सं भुमुचु म्लुचु अचु। स्त्रुचु हि भश्चाए म्लुचु
भश्चेरहास्यात्। अमुचत्। अम्रोचीत्। अम्लुचत्। अम्लोचीत्। २०१। युचु स्रुचु कुञ्जरुचु स्तेयकरणे। जुयो
वा अयुचत्। अयोचीत्। जुम्रोच। असुचत्। अम्लोचीत्। अकोजीत्। अखोजीत्। म्लुचु षष्ठ्यगतौ। अ
ह्। असुचत्। अमुंचीत्। सम्पश्रुत्वेन शः। जप्ते नञः। सज्जति। अयमात्मनेपद्यपि। सज्जते। २०८। गुजि अव

भारद्वाजनियमो निवर्तकः। अनंतरमेति न्यायात्। विविच। विवेच। आजिथा। विव्यधुः। विव्य। विवाय। वि
 विवा। विविम। वेत्ता। अजिता। वेष्पति। अजिष्पति। अजतु। अजत। अजेत। वीयात्। सिचिद्विद्विः परस्मैपदेषु
 श्रुंतांगस्पृष्टद्विः स्यात्परस्मैपदे परे सिचि। अवैषीत्। अजीत्। अवैष्पत्। अजिष्पत्। तेजपालने। तेजति।
 स्वजमं च। स्वजति। अंतर्भाविताप्यर्थस्तस्य कर्मकः। स्वजिगतिवैकल्पे। स्वजति। एज्कंपने। एज्चकार।
 २४०। दुष्टो स्फूर्ज। वजनिर्घोषे। स्फूर्जति। पुस्फूर्ज। द्विजये। अकर्मकः। अंतर्भाविण्यर्थस्तस्य कर्मकः। द्वि
 यति। चिद्विद्यतुः। चिद्विद्युः। चिद्विद्यिथ। चिद्विद्येथ। चिद्विद्यिमा। ज्ञेता। अकर्मकः। अंतर्भाविण्यर्थस्तस्य कर्मकः। द्वि
 स्पदीर्घः स्याद्यादौ प्रत्यये परेन तुहत्सार्धधातुकयोः। द्वीयात्। अद्वैषीत्। द्वीजश्च व्युत्पत्तेः। कृजिनाम
 हायं यद्विस्तृतः। चिद्वीजालजलजिभर्जने। लजलजिभर्जने च। जजजजियुदे। तुजहिंसायां। तोजति। तु
 तोजा। २५०। तुजिपालने। जगजिगृजगृजिमुजमुजिशब्दार्थाः। गजमदने च। वजवजगतौ। वदवजेतिद्विः
 वजजीत्। अथ दवर्गस्थिताः। शाश्वता अनुदानेनः। षट्शित्। अहश्चति क्रमणहिंसयोः। दोषधोयं।

७।२।

त ५

१४

धातुकेवेष्पते। विवाय। विव्यतुः। विव्युः। अत्रवकारस्पहल्परत्वात् उपधायां चेति दीर्घं प्राप्तेः चः परस्मि
 न्निति स्थानिवद्भावेनाच्चारत्वात् नचनुपदंति निषेधः। स्वादीर्घयलोपेषु लोपाज्जादेशात् स्थानिवदितु न
 केः। यल्लिङ्काचरतिरिति निषेधे प्राप्ते। कस्मै भूहस्ते दुषु सुबो लिटि। एभ्यो लिट् इत्यनस्यात्। कादीनां च
 तुर्णां ग्रहणं नियमार्थं। प्रकृत्या अयः प्रत्ययाश्च योवायावानि एनषेधः सलिटि चेत्तर्हि कादिभ्य एव
 नान्येभ्य इति। ततश्च तुर्णां यल्लिभारद्वाजनियमप्रापितस्य वमादिषु कादिनियमप्रापितस्य चेटो
 निषेधार्थं। अचस्तास्वत्यत्यनित्योऽनित्ये। उपदेशोऽजंतो योधातुस्त्वासौ नित्यानि इततः परस्य लेये इत्यन
 स्यात्। उपदेशोऽततः। उपदेशोऽचकारवतस्त्वासौ नित्यानि रः परस्य थल इत्यनस्यात्। अततो भारद्वाजस्यात् ७।२।६३
 निः सौ नित्यादौ अदंता देवयलो नेट् भारद्वाजस्य मतेन। तेनान्यस्मात्स्या देव। अयमत्र संग्रहः। अजंतोऽका
 रवान्वायस्त्वास्यानेट् यल्लि वेरये। अदंत ईहडि। त्यानि ईकाद्यन्यो लिटि सेज्जुवेत्। नचस्त्वादीना
 मपि यल्लिविकल्पः शंकरः। अचस्तास्वदिति उपदेशोऽतत इति च योगद्वयप्रापितस्यैव लिटि निषेधस्य

तासि पोरः निट् चैव इति तर्हि यल्लि पोरपि अनिट् भवतीत्यर्थः २

श्री ३१३

चट्टेष्टके

चट्टेष्टके

ण्योः॥ चकाट॥ सिचि॥ अतो हलदे लघोरिति ह्रस्वौ प्राप्तायां॥ ह्रस्वज्ञाणश्चमजागृणि॥ अदितां॥ ह्रमयां
 नस्पज्ञाण दे एपंत स्प श्रय ते रेदि नश्च ह्रदिर्न स्यादिज दौ सिचि॥ अकरीत्॥ ३००॥ अट पट गतौ॥
 आट॥ आटनुः॥ आटुः॥ पपाट॥ पेटनुः॥ पेटुः॥ एट परिभाषणे॥ लट वाल्मे॥ प्राटरुजा विशरण गत्पव
 सादनेश॥ वट वेष्टने॥ ववाट॥ ववटनुः॥ ववटुः॥ ववरिषा॥ किट खिरत्रासे॥ शीट षिट अनादरे॥ शो
 रति॥ शी शोटा॥ सेटाति॥ सिषेट॥ जरुट संघाते॥ भट भृतौ॥ नट उच्चाये॥ खट कांजायां॥ एट नृतौ॥
 पिट शहसंघानयोः॥ हट दीप्तौ॥ षट अवयवे॥ लुट विलो जने॥ जंतो यमित्येके॥ ३२०॥ चि ट प र प्रे ष्ये॥ चि
 ट शहे॥ विट आ क्रोशे॥ वशादिः॥ हिंसेत्येके॥ इट किट कटीगतौ॥ एट ति॥ केट ति॥ कर ति॥ ईका रूष्ठी
 दितो निष्ठा यामिती ए निषे धार्थः॥ केचित् कुर दितं मत्वा नुमिक्ते कंठ तीत्यादि वदंति॥ अते च इ ई इ
 ति प्राप्तिष्य॥ अय ति॥ इयाय॥ इयतुः॥ इयुः॥ इयायिष्य॥ इयेषां॥ इयाय॥ इयय॥ दीर्घ स्याच्चिजादे रित्या
 अयां चकारेत्यादि उदाहरंति॥ मडि भूषायां॥ कुडि वैकल्पे॥ कुंउ ति॥ कुंउ नर ति नुदाहे गतं॥ मुर

वेष्टने चेषु

तोपधर त्पेके। अहते। अनहे। २६०। वेष्टने चेषु। अचेष्टिष्ट। गोष्टलोष्टसंघाते। जुगोष्टो। लुलोष्टो। घट्ट
चलने। जघहे। स्फुटविकसने। स्फोरते। पुस्फुटे। अठिगतौ। अठते। आनंठे। वठि एक चर्यायां। ववंठे।
मठिकठिशेके। शोकेद्वे आधानं। मंठते। कंठते। मुठि पालने। मुंठते। हेट विवाधायां। जिहेठे। एठच।
एरां चके। हिडि गत्य नादरयोः। हिंउते। जि हिंउे। जुडि संघाते। जुहुंउे। कुडि दाहे। चुकुंउे। वडि विभा
जने। माडि च। भाडि परिभाषणे। परिहामः सनिं हो पालंभश्च परिभाषणं। पिडि संघाते। २८०। मुडि मार्जने।
मार्जनं शुद्धिर्न्यग्भावश्च। मुंउते। तुडि तोजने। तोजनं हारणं हिंसनं च। तुंउते। हुडि वरणे। हरणं त्पेके।
चडि कोपे। शाडि रुजायां। ताडि ताडने। पाडि गतौ। कारि मदे। रवडि मंथे। हेडु होडु अनादरे। जिहेडे। २
९०। जुहोडे। वाडु आप्लाव्ये। वशादिः। आप्लाव्यमाप्लवः। वाडते। जाडु धाडु विशरणे। शाडु श्लाघायां।
अथ आटवर्गीयं तसमाप्तेः परस्मैपादिनः। शौटु गर्वे। शौ टति। शु शौट। यौटु वंधे। यौ टति। स्लेडु
स्वेडु न्मादे। द्वितीयो जंतः। दांतमध्ये पाठस्त्वर्थसाम्यान्नार्थवत्। स्ने टति। म्रजति। कटे वर्षा वर



पुट भर्दने। चुडि अल्पी भावे। मुडि रंजने। मुंडति। पुडि चेत्येके। पुंडति। रुटि लुटि स्तेये। रुंटति। लुंटति।
 रुडि लुडि इत्येके। रुडि लुजि त्पपरे। स्फुटि रुवि प्रारणे। रुरित्वा दङ्गा। अस्फुटत्। अस्फोटीत्। स्फुटी
 त्पपि केचित्। रुदि त्वा न्मुत्। स्फुटति। पठ व्यक्तायां वाचि। पठ तुः। पठिथ। अपठीत्। अपाठीत्। व
 ठस्थो ल्ये। वव ठयुः। वव ठिथ। मठ मदनिवासयोः। कठ कृच्छ्रजीवने। रठ परि भाषणे। ३४०। हठ ह
 ति शठ त्वयोः। बलात्कारे इत्येके। हठति। ज्हाठ। रुठ लुठ उठ उपधातेऽग्नौ। ऊठेत्येके। ऊठति। ऊठ
 चार। पिठ हिंसा संक्लेश नयोः। शठ कैतवेच। पुठ घाते घाते। शोठति। पुठीतिकेचित्। कुठि च। कुंठति।
 लुठि आल स्पे प्रती धाते च। मुठि शोषणे। ३५०। रुठि लुठि गतौ। चुडु भाव करणे। भाव करणामभिप्राय सूच
 ने। चुडुति। चुडुडु। अडु अभियोगे। अडुति। आनडु। कडु कर्कशे। कडुति। चुडु दयस्त्रयो दोषधाः। ते
 नाकि पिचुत्। अत्। कत्। कीडु विहारे। विंकीडु। तुडु तो जने। तोडुति। तुतोडु। तूडु इत्येके। हूडु जूडु हो
 डु गतौ। हूड्यात्। जूड्यात्। होड्यात्। ३६०। रौडु अनादरे। रौडु लोडु उन्मादे। अज उद्यमे। अजति। अज।

कर्त्तव्यं सूत्रे प्रत्यय यत् ॥ १ ॥

३ ३ ३ ३ ३
 द्य आर्द्ध धातु के वा ३ आर्द्ध धातु क वि व ज्ञा माया द्यो वा स्तुः ३ का स प्र त्य य रा म मंत्रे लि टि । का स धातोः ३
 प्र त्य यं ते भ्यश्चाम् स्पा लि टि न तु मंत्रे । का स ने का ज्ञा ह रं म प नी य त त्स्थानेः ने का च द्वा ति वा च्य मि त्यर्थः ३
 ४४ अतो लोपः ३ आर्द्ध धातु को प दे श काले यद् कारं तं त स्पा कार स्प लोपः स्पा दा र्द्ध धातु के परे । गो पा यं च कार ।
 गो पा यं बभूव । गो पा या मास । जु गो प । जु गु पतुः । अदि त्वा द्वेद् । जु गो पिथ । जु गो पृथ । गो पाथि ता । गो पिता । गो
 प्रा । गो पाय्नात् । गुप्तात् । अगो पायीत् । अगो पीत् । अगौ सीत् ॥ धूप संतापे । धूपा यति । धूपा यं च कार । दुधूप ।
 धूपा यि तासि । धूपि तासि । जप जल्प व्यक्ता यं वाचि । जप मान से च । चप सा त्व ने । षप सम वाये । सम वायः सं
 वधः सम्प गव बो धो वा । सप ति । रप लप व्यक्ता यं वाचि । चुप मंदा यं गतौ । चो पति । चुचो पा । चो पिता । तुप तु
 म्प चुप चुम्प तुफ तुम्फ च्छुफ चुम्फ हिं सार्थाः । तो पति । तुतो पा ४२ । तुं पति । तुतुं पा । तुतुं पतुः । संयोगात्परस्प लि
 टः कित्वा भावा न्न लोपः किदा श्री षी ति कित्वा न्न लोपः । तुप्तात् । प्रा । नृप तौ गावे कर्त्तरीति पार स्करादि
 गणे पाठात्सद् । प्रसं पति गौ । क्षि पा निर्देशाच्च लुकि न । प्रतो तुं पी ति । चो पति । हुं पति । तो फति । तुं फति

॥ २ ॥

१७

विचिन्ते। कपते। चकपे। रविलवि। अवि। शहे। र। मे। लल। शे। अनंवे। लवि। अव। संसनेच। कववर्णे। चकवे।
 ली। व। अध। र्हे। चि। ली। वी। ली। पुमदे। ली। वते। शी। भूक। स्यने। शी। भते। ची। भूच। ३००। ते। ह। शहे। रि। मे। अभिरभी। क
 चित्पठेते। अ। मते। ए। गि। ल्क। मि। प्र। ति। बंधे। सं। भते। उतं। भते। उदः। स्या। सं। भोरिति। पूर्व। सवर्णः। वि। सं। भते। स्तं। अ
 रिति। षत्वं। तुन। भवति। शु। वि। धौ। नि। दि। द्या। स्प। सौ। च। स्पे। वत। च। य। त्प। णात्। तद्दी। जंतु। स्या। स्तं। भोरिति। पवर्गी। यो। पध
 पाठः। स्तं। भोरिति। तवर्गी। यो। पध। पाठ। उ। श्चे। ति। माधवः। के। चि। द। स्प। ट। कार। च। पदे। श्री। कद। त्पा। हुः। नन्मते। सं। भते।
 टं। मे। जमी। न्म। भि। गा। च। वि। ना। मे। री। धि। ज। भो। रा। चि। एतयोर्नुमागमः स्यादचि। जं। भते। जजं। मे। जं। भि। ता। अजं। भि
 हा। जं। भते। जं। तुं। मे। श। ल्प। क। स्यने। श। ला। ल्पे। वल्। भो। जने। दंतो। स्यादिः। ववल्। गल्। धार्ध्वे। गल्। ते। सं। भु। प्र। मादे।
 ताल। व्यादिर्दे। त्पादिश्च। अं। भते। सं। भते। पुं। पु। सं। भे। स्तो। भते। वि। शो। भते। तुहुं। मे। व्यष्टो। भि। द्या। ४००। अथ परस्मै
 पदिनः। गुप्। रज्ज। ए। गुप्। धूपे। वि। द्धि। पाणि। पानिभ्य। आ। यः। ए। म्य। आ। यप्रत्ययः स्यात्त्वा र्ध्वे। पुगं। ते। ति। गुणः। सनाद्यं ३१३९
 ताधातवः। सनादयः कमेर्णिजंताः प्रत्यया अंतेयेषां ते धातुसंज्ञाः स्तुः। धातुत्वात्तु जाह्वः। गोपायति। आया

सैक्यं काम्यं वपज् कपणे पाचारि विविज्य जेतया वगपस्य
 निरुति द्वादशमसि सनादयः २

नुबं

रा४

पितृत्यादि। स्मृता वैधस्य केवले चरितार्थत्वादाय अत्यं तात्त्रात्मनेपदं। पणायति। पणायो चकार।
र। पेणे। पणायितासि। पाणितासे। पणाय्यात्। पाणिषीष्ट। पनायति। पनायो चकार। पेने। भामने।
धे। भामते। बभामे। हृमृषमहने। ह्रमते। चहं मे। च हामिषे। चहं मे। चहामिधे। चहं धे। चहामि
मिवहे। मृष्ट। मां तस्य धातोर्नकां देशः स्यात्। मकारे चकारे च परे। एत्वं। च हएव हे। चहामि
हे। च हएमहे। हामिष्यते। हंस्यते। हमेत। आशिषि। हामिषीष्ट। हंसीष्ट। अहामिष्ट। अहंरत्त।
कम्। कातौ। कातिरिच्छ। कमेरिञ्ज। स्वार्ये। जिह्वात्तज्। कामयते। अयाम्। मन्तात्वापेक्षिष्टुष्टु। आ
म्। अन्तश्चालु। आय इन्। इहम्। एषु। एरयादेशः स्यात्। वक्ष्यमाण लोपाद्वाः। कामयो चके। आ
यादयश्चार्द्धधातुके। चकमे। कामयिता। कामिता। कामयिष्यते। कमिष्यते। एषिष्ठुस्तुभ्यः
कत्तिरिचज्। एपन्तात्। अर्द्धिभ्यश्चैश्च स्यात्। कर्धर्थे लुङि परे। काम्रश्चतेति स्थिते। ऐरानि
टि। अनिरोदावार्द्धधातुके परे ऐर्लोपः स्यात्। परत्वादेरनेकाच इति याणि प्राप्ते। एपलोपावि

३१४८

१८

चो फति। चुं फति। इहा धौ द्वौ पंच मष ह्यौ च नी रेफाः। अन्ये सरे फाः। आद्या शुक्लारूप्यमांताः। नतो द्वितीयं
 नाः। अथा वपुकार वंतः। पर्प रफ रफि अर्च पर्व लर्व चर्व मर्व कर्व खर्व गर्व शर्व षर्व चर्व गतौ। आद्यः प्रथमांतेः।
 नतो द्वितीयं तौ। नत एका दश तृतीयं ताः। द्वितीय तृतीयौ मुक्ता सर्वे रोपधाः। पर्पति। पपर्प। रफति। रं
 फति। ४१०। अर्चति। अर्चर्च। पर्वति। लर्वति। बर्वति। पवर्गीयादि रयं। मर्वति। कर्वति। खर्वति। गर्वति। श
 र्वति। चर्वति। कुविच्छादने। कुं वति। लुविनुवि अर्दने। लुं वति। तुं वति। चुवि वक्त्र संयोगे। चुं वति। षुभु
 षुं भुतिं साद्यौ। समति। ससर्भ। सर्भिता। स्तंभति। सस्तंभ। स्तम्भात्। विभुषिं भुङ्क्ष्ये के। सेभति। संभति।
 पुमं पुंभभाषणे। भासने इत्ये के। हिं सायामित्यन्ये। अथानुनासीकांताः। तत्र कम्पता अतुदातेते
 दश। धिणि धुणि घृणि यत्तणे। नुमं धुत्वं। धिणते। जिधिणे। धुणते। ज्जुधुणे। घृणते। जघृणे। घृण घूर्ण
 भ्रमणे। घोण ते। घूर्णते। इमौ तुदादौ परस्मै पादौ। पण व्यवहारे क्तौ च। पन च। स्तुता वित्ये वरं
 वध्यते पृथग्निर्देशोत्। पानि साहचर्यीत्यणेरपि क्ततावेवायप्रत्ययः। व्यवहारे तु पणते। पेणे। प

३। अतोमिष्ठा। इमौ दिवादी का दीच। संसु धंसु मं सु अवसंसने। धंसु गतौ च। अरिन्नो
 स्वसत्। अस्वसिष्ठा। नास्वसत्करिणं ग्रैवमिति रघुकाव्येपि। भ्रंश इति क्वचित्पेठुः। अत्र तृ
 तीया एवताल व्यांतद्रूपत्वे। भ्रशु भं शु अर्थः पतने। इति दिवादी। संभु विश्वासे। अस्व भत्। अस्वभि
 ष्ठा। हंत्पादिरयं। ताल व्यादिस्त्वं प्रमादे गतः। हतु वर्तने। वर्तते। वहते। वृद्धः स्पस नोः। हतादिभः
 परस्मैपदं वा स्यात्स्वे सति च। न ह्यश्वत्तु र्भ्यः। एभ्यः सका गदे राई धातुकस्ये एन स्यात्तज्जानरो।
 भावे। वर्त्स्यति। वर्त्तिष्यते। अहत्तत्। अवरत्तिष्ठा। अवरत्स्यत्। अवरत्तिष्यते। ह्युहृदौ। ह्युहृदौ।
 सभ्यः। इमौ हतिवत्। स्पदु प्रस्रवणे। स्पदते। सस्पंदे। सस्पदिषे। सस्पत्से। सस्पदिषे। सस्पंदे। स्प
 दिता। स्पत्ता। ह्यश्वः स्पस नो रिति परस्मैपदे हते ऊदिल्लक्षणं मंतरंगमपि विकल्पं वाधित्वा चत
 र्यहण सामर्थ्यान्न ह्यश्व इति निषेधः। संत्स्यति। स्पदति। स्पदति। स्पत्स्यते। स्पदिषीष्ट। स्पत्सी
 ष्ठा। ह्यश्वो लुङीति परस्मैपदं पदेऽङ्। नलोपः। अस्पदत्। अस्पदिष्ट। अस्पत्ता। अस्पत्ताता। अ
 त् अतः। अस्पदिष्यत्। अस्पत्स्यत्। अनुविपर्ययमितिभ्यः स्पदते रत्राणिषु। एभ्यः परस्यात्राणिषु

अस्यत्ता

८ ३ ७३

ह्येते शुभप्रणताः परस्मैपदि नः॥ ज्वरोगो ज्वरति। जज्वार। गजसेचने। गजति। जगाज। हेजवे
 हने। हेजु अनादर इत्यात्मनेपदेषु गतः। स एवोक्तृ ह्यनुबंधो नूद्यते। अर्थविशेषे मित्वांथे। प
 रस्मैपदिभ्यो ज्वरादिभ्यः प्रागेवानुवादे कर्तव्ये तन्मध्ये अनुवादसामर्थ्यात्परस्मैपदं। हेजति। जि
 ह्वाविति पाठितयोः परिभाषणमिति त्वार्थेनुवादः। नटनृतौ। इत्यमेव पूर्वमापि पाठितं। तत्रायं वि
 त्तचार्थः। यत्कारिषु नर्तक्यपदेशः। वाक्योभिनयोनायं। घटादौ नृत्यं न
 घटादौ नटनताविति पठति। गतावित्यन्ये। एते पदेशपर्युदासवाक्ये भाष्यकृतानाटीति
 न शब्दं। कवेत्सने। एहि त्वान्न ह्यदिः। अकरवीत्। ७९०। रगोशं कायो। लगे संगो। इगे लूगेष
 वि

। प्रविष्टा टयिता समुत्पन्न हरिदृष्टः । कमला करानिवेत्पादि । शृणु । घटसंघाते । इति चो रादिक
 ३ । अनन्तस्यैवार्थविशेषे मित्वार्थमनुवादोयामीति वाच्यं । नान्ये मितो हेताविति निषेधात् । अहेतोस्त्वा
 य एचिद्वपादिपंचव्यतिरिक्ता श्रुतौ दयो मितो नेत्यर्थः । यथभयसंचलनयोः । व्यथते । व्यथो लिखि
 ती । व्यथो भ्यासस्य संप्रसारणं स्यात् । हलादिः शेषा पवादः । यस्य हलादिः शेषे ए निदानेः । विव्यथे ।
 ७७० । पप्रथारव्याने । पप्रथे । प्रसविस्तारे । पप्रसे । प्रदमर्दने । स्रवदस्रवदने । स्रवदते । स्रवदने वि
 पप्रथारव्याने । जिगतिदानयोः । मित्वसामर्थ्यादनुपधात्वे चित्तमुलो रिति दीर्घविकल्पः । अज्ञाज्ज्ञे
 अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे । अज्ञाज्ज्ञे ।
 त्स्येहार्थविशेषे मित्वार्थोऽनुवादः । कपकृपायांगतौ च । कदि कदि कृदि वै कृव्ये । वै कल्प
 इत्येके । त्रयोपनिहित इति नंदी । इदित इति स्वामी । कदि कदी इति तौ । कद कृदेति चा
 निदिताविति मैत्रेयः । कदि कदि कृदीनामाज्ञानरोदनयोः परस्मैपदेषूक्तानां पुनरि
 त्पादो मित्वार्थमात्मनेपदार्थश्च । ७८० । जित्वरास भ्रमे । घटादयः पितः । पित्वा दङ् कृत्स्व

के। धेदति कृता त्वस्य श्रद्धादादिकस्य च सामान्येनानुकारेण। लुगि कारणा लुगि रणयो रलुगि
 करणस्य। लङ्गणवति पदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्येति च परिभाषाभ्यां। अपयति। विल्लेदयतीत्यर्थः। पा
 मंकादस्य च अपयति। स्वेदयतीत्यर्थः। मारणातोषण निशामनेषुज्ञा। निशामनेचाक्षुषज्ञानमिति।
 हो। धवः। ज्ञापनमात्रमित्यन्ये। निशानेध्वितिपाठान्तरं। निशानंतीदृणीकरणं। एष्वेवार्थे सुज्ञानातिमि
 के। रूपमिध्वेतिचुरादौ। ज्ञापनं मारणादिकं चतस्यार्थः। कथं विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति। तज्ज्ञापयत्याच
 के। इति च। मृण। माधवमतेः। चाक्षुषज्ञाने मिह्याभावात्। ज्ञापनमात्रे मिह्यमिति मते तु ज्ञानियोगादिति च
 रादिकस्य। धौनूनामने कार्यत्वात्। निशानेध्वितिपठानां हरदत्तादीनां मते तु न काप्यनुपपत्तिः। कंपने चलिः।
 चलकंपने इति ज्वलादिः। चलयति शारवं। कंपनादस्य च तु शीलं चलयति। अन्यथा करोतीत्यर्थः।
 तरतीत्यर्थ इति स्वामी। सूत्रं चलयति। क्षिपतीत्यर्थः। छदिरुर्जने। छद अपवारण इति यौजादिकस्य
 न प्रर्येणीजभावे मिह्यार्थो यमनुवादः। अने कार्यत्वाद् उर्जं र्थे वृत्तिः। छदं तं प्रयुंक्ते छदयति। बलवंतं प्रा
 विहितं वा करोत्यर्थः। अन्यत्र छादयति। अपवारयं तं प्रयुंक्ते इत्यर्थः। स्वार्थे णि चितु छादयति। बलीभ
 ती।

ने २

नो संवरणे। कगे नो च्यते। अस्मा यमर्थ इति विशिष्य नो च्यते। क्रिया सामान्यार्थत्वात्। अने कार्यत्वादि
 ने। अक अग कुटिलायां गतौ। कणरणगतौ। ८००। चकाण। रण। चण। शण। अण। दा नेच। शणगतावि
 पत्ये। अण अण कण कण हिंसार्थः। जासि नि प्रहणेति सूत्रे कायेति मित्वेपि वृद्धिर्निपात्यते। काथयति।
 मित्वनु निपातनात्परत्वाच्चि एमु लोरिति दीर्घे चरितार्थे। अकाथि। अकाथि। कथं। कथं। काथं। काथं।
 वनच हिंसायामिति शेषः। वनु च नो च्यते। वनु इत्य पूर्व एवायं धातुर्ननु तौदिक स्यानुवादः। उदित्कर
 सामर्थ्यात्। तेन क्रिया सामान्ये वनतीत्यादि। प्रवनयति। अनु पस्व स्यतु मित्वा विकल्पो वक्ष्यते।
 प्रज्वलदीप्तौ। ए प्रत्ययार्थे परिष्पमाण एवायं मित्वा र्थमनूयते। प्रज्वलयति। हलत्सल संचलने। प्र
 यति। प्रसलयति। स्मृ आ ध्याने। चिंतायां परिष्पमाण स्प आ ध्याने मित्वा र्थो नुवादः। आ ध्यान मुक्ते
 पूर्वकं स्मरणं। हृ भये। हृ विहारण इति क्रादेर यमनुवादः। हृणं तं प्रेरयति हरयति। भया दन्य वदा
 यति। धात्वन्तर मे वेदमिति मते तु हरतीत्यादि। केचिद्दुरादौ अत्स्मृ हत्वरोति सूत्रे च हृ इति दीर्घ स्या
 ने हृत्वं पठंति। तन्नेति माधवः। हृ नेये। क्रादिषु परिष्पमाण स्यानुवादः। नया दन्य वनारयति। आ पा

मित्रा अये ज्ञाने ज्ञापने वर्त्तते। मिता इत्यर्थः। मिता सुपधाया इत्यर्थः स्मात्तलौ परे। न प
 दाति। यमचपरिवेषणो चान्मित्र। परिवेषणमिह वेष्टाने। नतु भोजनानापि वेष्टाना। य
 मयति चंद्रे। परिवेषत इत्यर्थः। चरुपरिकल्कने। चरुयति। अची चरुत्। कथा
 हो वक्ष्यमाण स्पतु अदंत त्वेना ग्लोपित्वा हीर्घसन्वद्भवौ ना। अचचरुत्। चपदत्ते
 के। चपयति। रत्न्याग इत्येके। चरीरुत्। कथादेस्तु। अरुत्। बलघ्राणने। बल
 यति। चिन्तयते। चिस्तुरे लौ। अतं वा स्मात्। अर्त्तिदी। श्री। कुयी द्वा प्पातां पुद्गलौ। ए
 षां पुक्क्या लौ। चपयति। चपति। नित्करण सामर्थ्यादस्माणि ज्वि कल्पः। चपते। प्राणि
 चयति। प्रनिचयति। नान्ये मिता हेतौ। अहेतौ स्वारथेणि चित्रपादिभ्यो न्ये मिता नस्पुः। ते
 नशमादीनाममंतत्त्वप्रयुक्तं मित्रं त। घटचलने। मुस्तसंघते। खट्वसं वारणे। घटस्मिद्वु इत्ये
 विहिंसायां। पूलसंघाते। पूर्णे इत्येके। पुणेत्यन्ये। पुंस अभिवर्द्धने। टकि वंधने। टंकय

संवरणे। कगे नोच्यते। अस्या यमर्थ इति विशिष्य नोच्यते। क्रिया सामान्यार्थत्वात्। अने कार्यत्वादि
 अकच्युग कुटिलायां गतौ। कणरणगतौ। ८००। चकाण। रराण। चणशण अण दानेच। शणगतावि
 त्पन्ने। अणअण कथ कथ हिंसार्थः। जासि निग्रहणेति सूत्रे कायेति मित्वेपि वृद्धिर्निपात्यते। काथयति।
 मित्रतु निपातनात्परत्वाच्चि एमु लो रिति दीर्घं चरितार्थं। अकाथि। अकाथि। कथं। कथं। काथं। काथं।
 वनच हिंसायामिति शेषः। वनु चनोच्यते। वनु इत्य पूर्व एकायं धातुर्ननु तौदिक स्यानुवादः। उदित्कर
 ए सामर्थ्यात्। तेन क्रिया सामान्ये वनतीत्यादि। प्रवनयति। अनुपेष्ट स्यतु मित्वविकल्पो वक्ष्यते।
 दाव ज्वलदीप्तौ। ए प्रत्ययार्थं परिष्माण एवायं मित्वार्थमनूयते। प्रज्वलयति। हलललल संचलने। प्र
 यति। प्रसलयति। स्मृ आ ध्याने। चिंतायां परिष्माण स्प आ ध्याने मित्वार्थेनुवादः। आ ध्यानमुक्ते
 पूर्वकं स्मरणं। हृ भये। हृ विहारण इति क्रादेर यमनुवादः। हणं तं प्रेरयति हरयति। भया दन्त्यत्र ह
 रयति। धात्वंतर मे वेदमिति मते तु हरतीत्यादि। केचिद्दुरादौ अस्मृ हत्वरोति सूत्रे च हृ इति दीर्घस्या
 नेह स्वपठंति। तन्नेति माधवः। हृ नये। ज्यादिषु परिष्माण स्यानुवादः। न्या दन्त्यत्र नारयति। आ पा

मित्र। अयं ज्ञाने ज्ञापने वर्त्तते। मितां द्रव्यः। मिता सुपधाया द्रव्यः स्मात्तौ पी। त प
 दात। एमचपीरेषणे। चान्मित्र। परिषेणमिह वेष्टाने। नतु भोजनानापि वेष्टाना। य
 मयति चंद्रे। परिषेष्टत इत्यर्थः। च ह परि कल्कने। च ह यति। अची च हत्। कथा
 हो वक्ष्यमाण स्पतु अदंत त्वेना ग्लोपित्वा हीर्घसन्वद्भावौ ना। अचच हत्। चपद्रव्ये
 के। चपयति। रहत्याग इत्येके। अरी रहत्। कथादेस्तु। अर रहत्। बलप्राणने। बल
 यति। चिन्तयते। चिस्फुरौ लौ। अत्वं वा स्मात्। अर्त्तिङी। श्रीरी कुरी द्वाप्ताता पुङ्गु लौ। ए
 षा पुक्स्मा लौ। चपयति। चपति। निष्करण सामर्थ्यादस्माणि ज्वि कल्पः। चपतो प्राणि
 चयति। प्रनिचयति। नान्ये मितौ हेतौ। अहेतौ स्था र्थेणि विज्ञपादिभ्यो न्ये मितौ नस्पुः। ते
 नशमादीनाममेतत्त्वप्रयुक्तं मित्वेन। घटचलने। मुक्तसंघते। खट्वसंवरणे। षट्स्फिद्वु
 विहिंसायां। शूलसंघाते। पूर्णे इत्येके। पुणेत्यन्ये। पुंस अभिवर्द्धने। टकिबंधने। टंकय

नृण इत्येके। कुठि इत्येके। श्रव कुंठयति। श्रव कुंठति। गुठि इत्यपरे। खुडि खंडने। वरि वि
 भाजने। वडि इत्येके। ~~कुठि इत्येके~~। मडि भूषाया। हर्षे च। भाडि कल्पाणे। चर्च इव मने।
 पुस्तु पुस्तु आदरा नारयोः। चुद संचोदने। नक्षधक्कनाशने। एते पदे शाल दणे पर्युद
 षोये। प्रन कयति। चक्चुक् व्यथने। दल शौच कर्मणि। तल प्रतिष्ठायां। तुल उन्मा
 दं। तोलयति। शत्रु तुलत्। कथं तुलयति तुलना इत्यादि। शत्रुलोपमाभ्यामीति निपा
 तना दजं तस्य तुलो शास्त्रसिद्धौ ततो एव। तुल उद्देशे। पुल महत्त्वे। चुल समुद्राये।
 मूल रोहणे। कल विलक्षणे। विल भेदने। तिल स्नेहने। चल भृतौ। पाल रक्षणे। लूष हिं
 सायां। मुल्य माने। मूर्ध्नि च। मुट छेदने। मुट संचूर्णने। पडि यसिनाशने। पंडयति। पंड
 यति। यंस यति। यंसति। वज मार्ग संस्काराग्रायोः। मुल्लु अति शीघ्रं। चपि गत्यां। चंपय
 ति। चंपति। दपि द्वांत्यां। दंपयति। दंपति। दजिह्वं जीवने। शूर्ज गत्यां। शूर्ज च। द

शृणो॥ मोक्ष ए इति केचित् । जं सयति । जं सति । ईड स्तुतौ । जमुहि सायां । पिडि संघाते । रु
 धरोषे । रुड इत्येके । डिप सेवे । तूप समुच्छाये । आकु स्मा रात्मने पादिनः । कुस्म नास्मो
 वेति वक्ष्यते । तम भिव्याप्ये त्यर्थः । अक त्वं गामि फलार्थमिदं चित संचेत नै । वेतय ते ।
 अची चित्त । दशि दंशने । दंशयते । अद दंशत । इदि त्वा पिजभावे । दंशति । आकु स्मा
 यमात्मनेपदं एि वानियो गेने वेति व्याख्यातारः । नलो पे संजि साह चर्या द्वादे रे वग्रह
 ए । दसि दर्श नदंश नयोः । दंसयते । दंसति । दसेत्यप्येके । उपडिप संघाते । तत्रिकुटुं
 वंधारणे । तंत्रयते । चोड धातु द्वय मिति मत्वा कुटुंबयते । इत्पु दा हरति । मत्रि गुप्त परि
 भाषणे । स्पशय हण संश्लेषणयोः । तर्ज भर्त्स तर्जने । वस्त गंध अर्दने । वस्तयते । गंध
 यते । विष्क हिंसायां । हिष्केत्येके । निष्क परिमाणे । लल ईसायां । कूण संकोचे । तूण पु
 णो । भूण आश विप्रं कयोः । प्राठ श्लाघायां । यज्ञ पूजायां । स्पम वितर्के । गूर लसने ।

ति। टं कति। धूसकांति करणे। धूसयति। दं त्यांतः। मूर्धन्यां तदत्येके। तालव्यां तदत्येके।
 कीटवर्णे। चूर्णसंकोचने। पूजपूजायां। शूर्कस्त्रचने। तपनदत्येके। सुठशालस्ये। पु
 ठि शोभणे। सुठयति। सुठति। जुडघ्रेणे। गजमार्जे शार्थे। गाजयति। मार्जेयति। मर्च
 च। मर्चयति। हृप्रस्त्रवणे। स्वावणे इत्येके। पाचिविस्तारवचने। पंचयति। पंचते इति व्य
 क्तार्थस्य शापिगतं। तिजनिशाने। तेजयति। कृतसंशब्दने। उपध्यायाश्च। धातो रूपधाभू
 तस्य ऋतदत्प्यात्। रपरत्वं। उपध्यायां चेति दीर्घः। कीर्त्तयति। उर्त्तृत्। अचीकृतत्।
 अचि कीर्त्तत्। बर्द्धच्छेदनपूरणयोः। कुविच्छादने। कुं वयति। कुं वति। कुभिदत्येके। लु
 वितुविश्रुदशने। अर्दं नदत्येके। श्लेषव्यक्तायां वाचि। क्लपेत्येके। चुरिच्छेदने। इल
 प्रेरणे। एलयति। ऐलितत्। मृदस्त्रेच्छने। स्त्रेच्छश्च व्यक्तायां वाचि। ब्रूसवर्तहिंसाया
 । केचिदिह गर्जगर्दशब्दे गर्धश्च भिकां द्याया मिति पठंति। गुर्दपुर्वनिर्कतने। जसिर

नक्तम्यमिचमामितिमित्वनिषेधः॥

श्रुति। जंभति। शूद हारणे। सूदयति। अशू सुदत्। जसु ताउने। जासयति। जसति। पश वंधने। प
शयति। अमरोगे। आसयति। नान्येमित् इति निषेधः। अमगात्यादौ शपिगतः। तस्मा देतुमलौ आ
मयति। चट स्फुट भेदेने। विकामेश पोः स्फुटति स्फोटते इत्युक्ते। घट संघाते। घाटयति। हं
त्यर्थाश्च। नवगणपामुक्ता अपि हंत्यर्थाः स्वार्थे णि चंलभंते इत्यर्थः। दिवु मर्दने। उदित्वा हेव
नीत्यपि॥ अर्जु प्रतियत्ने। अयमर्थोतरेपि। इवमर्जयति। क्षुषि रुविश्राप्ते। द्योषयति। क्षुषि
रविश्राप्ते नद्र तिस्रत्रे विश्राप्ते निषेधाल्लिङ्गादिति तपोस्पाणि च। द्योषति। शरित्वा दद्वा। अद्यु
षत्। अद्योषीत्। एतत्स्य तु। अज्जुषत्। आऋः कंदसातये। भौवादि कः कंदधातुराज्ञाना
द्यर्थ उक्तः स एवाऋपूर्वो णि चंलभंते सातये। आ कंदयति। अन्ये तु। आऋ पूर्वो क्षुषिः कंद
सातये इत्याहुः। आद्योषयति। लस शिल्पयोगे। तसि भूष अलंकारणे। अवेतं सयति। भू 6
षयति। अर्ह पूजायां। ज्ञानियोगे। आज्ञापयति। भज विश्राणने। मृधुप्र हसने। अश्राशई

शमलक्षणां चने। नान्ये मितइति मिच्छनिषेधः। शामयते। कुत्सु अवदोपणे। कुट्टु दने।
 कुट्टुत्पे। गलस्त्रवणे। भलश्चाभंजने। कूटश्चाप्रदाने। अवसादइत्येके। कुट्टप्रतापने। व
 चुप्रभने। दृषशक्तिवंधने। शक्तिवंधनं शक्तिसंबंधश्च। वर्षयते। मदतृप्तियोगे। दिवु परिक्लृप्त
 ने। गृविज्ञाने। गारयते। विदचे तनारव्यानविवासेषु। वेदयते। सत्रायां विद्यते ज्ञाने वेति
 विदने विचाविदने विदति। प्राप्नोश्चपन्लुकुश्चमृशोषिदं क्रमात्। मनस्संभो। मानयते। पु
 नुगुप्सायां। यावयते। कुस्मनामोवा। कुस्मेति धातुः। कुत्सितस्मयने वर्त्तते। कुस्मयते। अ
 चुकुस्मत। अथवा कुस्मेति प्रातिपकं। ततो धात्वर्थे णिच्। इत्याकुस्मीयां॥ चर्चश्च भय
 ने। बुक्भाषणे। प्राष्टुपसर्गादा विष्कारे। चाडाषणे। प्रतिप्राष्टयति। प्रतिश्रुतमाविष्क
 रोतीत्यर्थः। अनुपसर्गाच्च। आविष्कारे इत्येव। प्राष्टयति। कणानि मीलने। णौ च ह्युपधा
 यद्भवः। काण्पादीनां वेति विकल्पते। अची कणत्। अचकाणत्। जमिनाशने। जं

नुजयेति। नुजति। एव परेषां। घाटयति। घटयति। नालोपि शास्त्रदितो। एचि च ग्लोपिनः शास्त्रेः
 अदितां च उपधाया द्रव्यो न स्यात् चङ् परेणौ। अलु लो कत्। वर्तयति। वर्द्धयति। उदि त्वा हर्त
 नि। वर्द्धति। रुठ लजि अजि दसि भोशी रेधि शी कनट छुटि जु वि राधिलधि अहिरहि महिच
 । लडि तउ नत च। पूरी आ प्ययने। ईदि त्वं निद्यायामि एन षे धाय। अत एव एणि ज्वा। पूरयति।
 पूरति। रुज हिं सायां। श्वद आ स्वा दने। स्वादरूपे के। आसि श्वदत्। दीर्घं स्प त्व षो पदेश त्वा द
 सि स्वदत्। अधृषा द्वा। इत ऊर्द्ध वि भाषिता एचि चः धृष धातु मभिव्या प्य। युज पृ च सं य मने। यो
 जयति। अयौ द्यौत्। पर्वयति। पर्वति। पर्विता। अपर्वीत्। अर्च पूजायां। ष ह मर्ष णे। माह
 यति। स एवायं नार्गः कल भेभ्यः परि भवं। ईर द्यौपे। ली इवी करणे। लापयति। लयति। ले
 ता। वृजी वर्जने। वर्जयति। वर्जति। वृञ् आवरणे। वारयति। वरति। वरते। वीरता। वरीता। मृ
 वयो हानौ। जायति। जरति। जरिता। जरीता। ज्विच। ज्वाययति। ज्वयति। ज्वेता। रिच वियो



त्। अशी मृधत्। यत नि कारो पस्कारयोः। रक् लग आस्वा दने। रघ इत्ये के। रगे त्यन्ते। अचु वि
 शेषणे। अच यति॥ अदि त्वं एणि ज्ञि कल्पार्थे। अत एव वि भाषतो एि च। अचति। एवं मृधुज
 सुप्रभृतीनामपि बोधे। लिणि चित्रीकरणे। लिगयति। लिं गति। मुद संसर्गे। मो दयति
 स कृन् ह तेन। अस धारणे। ग्रह ण इत्ये के। वारणे इत्यन्ते। उध्रस उंछे। उकारो धात्व व
 ग्व इत्ये के। नेत्यन्ते। ध्रासयति। उध्रासयति। मुच प्रमो चने मो दने च। वस स्नेह छेदा
 पहरणे। चर संशये। चु सहने। हसने चेत्ये के। आ वयति। चुसेत्ये के। चोसयति। भु
 वो व कल्कने। अव कल्कनं मिश्रीकरण मित्ये के। चिंतन मित्यन्ते। भावयति। कृपे च।
 कल्पयति। आ स्व दः सकर्मकात्। स्वदि मभिव्या प्पसं भवत्स कर्म भ्य एव एणि च। अस
 ग्रहमे। ग्रास यं फलं। उष धारणे। पोष त्या भरणे। दल विदारणे। दालयति। पट पुट लुट तु
 जि मि जि पि जि लु जि भजि लाघि त्रसि पिसि कु सि दा शी कु शि घ ट घटि दृ हि वर्ह व लू

धूयन्ती नोर्नुग्वक्तव्यः॥ धूनयति। धवति। धवते। केचिन्नुधूयन्ती णोरिति पठित्वा प्रीण
 माह चर्यादन्तातेरवनु कमाहुः॥ धावयति। श्रयं स्वादौ ऋयादौ तु दादौ च। स्वादौ दस्व
 नयाचकाविहस्ये। धूनोति चंपकवनानि धूनोत्यशोकं चूतधुनाति। धुवति स्फुरि
 स्फुरत्। वायुर्विधूनयति चंपकपुष्पेण न्यत्कानेन धवति चंदनमंजरीशु। प्रीज
 ॥ प्रीणयति। धूयन्ती णोरिति हरदत्तोक्तपाठे तु प्रापयति। प्रयति। प्रयते। प्रययं प्र
 ॥ आहू व्याप्रा॥ आपयति। आपति। आप्रा। आपत्। स्वरिते दयमित्येके। आप
 नुस्रद्धोपकरणयोः॥ उपसर्गबुद्धौ। तानयति। वितानयति। तनति। चनश्रद्धोप
 णोरित्येके। चानयति। चनति। वदसंदेशवचने। वादयति। स्वरिते तु। वदति। व
 धुनुत्रेदित्येके। ववदतुः। ववदिथ। ववदे। वद्यात्। वचपरिभाषणे। वाचयति। व
 ॥ व्रक्ता। आवाहीत्। मानपूजायां। मानयति। मानति। मानिता। विचारणे तु भौवादि
 तिससन्नतः। स्तभेमानयते। इत्याकुस्मीयः॥ मन्यते इति दिवा दौ। मनुते इति न

63 38

^अ
 न्नयोः। रेचयति। रेचति। रेक्ता। शिषसर्वोपयोगे। शोषयति। शोषति। शोषा। अशिद
 ति। शये। तपदाहे। तापयति। तपति। तप्ता। तृपत्तौ। संदीपनइत्येके। तपयति।
 तपिता। छुदीसदीपने। छुदयति। छुदति। छुदिता। छुदिष्यति। मेसिवीति विक
 साहचर्यात्तत्र रौधादिकस्यैव ग्रहणात्। छप छूप तृप हृप संदीपनइत्येके। छर्प
 णीभये। दर्भयति। दर्भिता। दृभसं दर्भे। अयंतुदादावीदित्। अयमोक्षणे। हिंसां मि पा ५
 गातौ। माययति। मयति। मेता। यथबंधने। यथयति। यथति। शीक आमर्षणे। ची
 र्दहिंसायां। स्वरितेत्। अर्दयति। अर्दति। अर्दते। हिंसिहिंसायां। हिंसयति। हिंसति।
 तीति अमिगतं। अर्हपूजायां। आर्जः षंयर्थे। आसादयति। आसीदति। पाद्येति सीदादे
 आसना। आप्नात्सीत्। अुद्ध शौचकर्मणि। अुद्धिता। अुद्धीत्। अुद्धिष्टा। छदश्चपवा
 लुरितेत्। अुषपरितर्कणे। परितर्कमूहो हिंसावा। परितर्पणमित्यन्ये। परितर्पणं
 क्रिया। जोषयति। जोषति। प्रीतिसेवनयोर्जुषते तुदादौ। धूज्जं पने। एणवित्यधि

यति। अपीपतत्। अथ अनुपसर्गोत्। गतावित्पेव। पषयति। स्वरश्चाक्षेपे। स्वरयति। रचयति। य-
 त्। रचयति। कलंगतौ। संख्यानेच। चरपरिकल्पने। परिकल्पनं दंभः। शाब्दं च। महपूजायां।
 महयति। महतीति शपिगतं। सारक्षपश्च हैर्वल्ये। सारयति। कपयति। प्रथयति। स्मृ-
 दंशोयां। भामक्रोधे। अवभामतू। सूचपैश्वन्ये। सूचयति। अषोपदेशत्यान्वषः। असु सूच-
 तू। खेटभक्षणे। तृतीयां तद्वत्येके। खेट इत्यन्ये। द्योतक्षेपणे। गोमउ पलोपने। अजुगो-
 मत। कुमारक्रीडायां। अचुकुमारतू। शील उपधारणे। उपधारणमभ्यासः। सामसंत्वप्र-
 योगे। अससामतू। सामसंत्वने इत्यतीत स्पतु असीषमतू। बेल कालोपदेशो। बेल-
 यां काल इति पृथग्धातुरित्येके। कालयति। पल्लुल्लव नपेवनयोः। वातसुखसेव-
 नदं। गीतिसेवनयोरित्येके। वातयति। अववातते। गवेष मार्गणे। अजगवेषतू। वास ७४
 उप-। निवास आश्वासने। भाजपृथक्कर्मणि। सभाजप्रीतिदर्शनयोः। प्रीतिसे

नार्होः। रेचुः। त्मने परी। भावयते। भवते। णि च संनियोगे नैवा त्मने परमि ते के। भवति।
 गर्ह। दने। मार्गश्च न्येषणे। कठि शोके। उत्पूर्वो यमु त्के ठायां। कंठ ते इत्या त्मने परी
 गते। मृषू शौ चाले। कारयोः। मार्जयति। मार्जति। मार्जिता। मार्ज्या। मृषति तिहायां
 स्व। तेत्। मर्षयति। मर्षति। मर्षते। मृष्यति। मृष्यत इति दिवा दौ से चने। प्रापि मर्षति।
 धृष। सज्जने। धर्षयति। धर्षति। इत्या धृषीयाः। अर्था देता। कथ वाक्य प्रबंधे। अल्लो पस्प
 स्या। वेव द्वा वान्न हृदिः। कथयति। अग्लो पित्वा न्नदी र्घ्य सन्व द्वा वौ। अच कथत्। वर
 ईप्साया। वरयति। वारयतीति गतं। गण संख्याने। गणयति। ई च गणः। गणेर भ्या सम्प
 ईत्स्याञ्चु इ परेणौ। चादत्। अजगणत्। अजीगणत्। प्राठ। अठ। सम्प गव भाषणे। पट
 वट ग्रंथे। रहत्यागे। अरहत्। स्तनगदी दे वशादे। स्तनयति। गदयति। अजगदत्। पत
 गाग्री वौ। वाड दंत इत्येके। आद्ये पतयति। पतति। पतां चकार। अपतीत्। द्वितीये। पात
 वाणिजंजः।

लयते। श्रुतुः स्यात्। श्रुतुः उपयान्त्रायां। श्रुयते। श्रुयते। सत्रसंज्ञानक्रियायां। अससत्र
 ता। अनेकोच्चारणोपदेशः। सिसत्रयिषते। गर्वमाने। गर्वयते। अदेतत्त्वसामर्थ्यात्। सिद्धि
 कल्पः। धातो रंत उदात्तः। लिङ्गान्वाफलं। एवमयेपि। इत्यागर्वीयाः। सूत्रवेष्टने। विमो
 चनइत्यन्ये। सूत्रयति। अमुसूत्रत्। सूत्रप्रसवणे। सूत्रयति। सूक्ष्मपासुष्ये। पा
 रती। र्कर्मसमाप्नो। अपपारत्। श्रुतितीरत्। पुट संसर्गो। पुटयति। धेक दर्शने इत्येके। अ
 दिधेकत्। कत्रशैथिल्ये। कत्रयति। कर्त्तृत्पप्येके। कर्त्तयति। प्रातिपदिकाद्वात्वर्ये बहु
 लमिष्टुबहु। प्रातिपदिकाद्वात्वर्ये णिच् स्यादिष्टे यथा प्रातिपदिकं स्पुं वद्वा वं टि रभाच ४
 लोपविन्मत्तु लोपयणाल्लोपप्रस्थ स्फाद्यादेश भसंज्ञा स्तद्धत्वावपि स्पुः। पदुमाच
 ह्यपरयति। परत्वाद्द्वौ सत्यां टिलोपः। अपीपटत्। णौ चङीत्पत्र भाषेतु हृद्वेर्लोपो व ५
 लीयानिति स्थितं। अपपटत्। तत्करोति तदा च ह्ये। पूर्व स्पत्रपंचः। करोत्याच ह्यद

व... । सभाजयति । ऊनपरिहाणे । ओः पुयाणि इति सूत्रे पययो रीतिवक्तव्येव
 गी... । रयतौ लिंगा । एचि अच आदेशो न स्यात् । द्वित्वे कं ये इति यत्र द्विरुक्ता वभ्या
 सो... । खंजस्य आद्योऽच प्रक्रियायां परिनिष्ठिते रूपे वाऽवर्णे लभ्यते तत्रैवायं निषे-
 धो । तापकस्य सजातीयापेक्षया त्रेनाचिकीर्तयितुं सिद्धं । प्रकृते तु नष्टा एव हि त्वं त-
 तत्तरखंडेऽल्लोपः । औन्नतम् । मा भवान्नूनतम् । धनशब्दे । अदधनम् । कूटपरितापे ।
 परिहात इत्यन्ये । संकेतयाम कुण गुण चामंत्रणे । चात्कूटोपि । कूटयति । संकेतयति ।
 यामयति । कुणयति । गुणयति । पाठांतरं । केतश्चावणे निमंत्रणे च । केतयति । निकेत-
 यति । कुण गुण चामंत्रणे । चकारात्केत । कूण संकोचने इति स्तेनचौर्ये । श्रुतिस्तेन-
 । आगर्वादात्मनेपदिनः । पदगतौ । अपपदते । ग्रहग्रहणे । ग्रहयते । मृगशृङ्खलेषणे । मृ-
 गयते । मृगपतीति कंदादिः । कुहविस्मापने । मूरवीरविक्रांतौ । स्थूलपरिवृद्धणे । स्थू-

ति अतयति। वाचस्पतिने। चित्रचिंकारणे। आलेष्यकरण इति। कदाचिद्वर्णने। चित्रे
 त्वयमभुतदृष्टीं स एषि च लभते। चित्रयति। असं समाधाते। वटविभाजने। लज्जप्रका
 शने। वटिलज्जिदत्तेके। वटयति। लज्जयति। अदंतेषु पाठवलाददंतत्वे वृद्धिरित्यन्ये
 वंटापयति। लेङ्गापयति। शाकटायनस्तु कथादीनां सर्वेषां प्रकमाह। तन्मते कथा
 पयति। गणापयतीत्यादि। मिश्रसंपर्के। संग्रामयुद्धे। अनुदात्तेत्। अकारप्रक्षेपात्।
 असं संग्रामत। स्तोमस्माद्यायां। अतु स्तोमत। छिद्रकर्णभेदने। करणभेदनरूपन्ये।
 कर्णेतिधात्वंतरमित्यन्ये। अंधदृष्ट्युपधाते। अंधधत्। उपसं हाररूपन्ये। दंडदंड
 निपातने। अंकपदेलक्षणेषु। अचकत्। अंगच। अजगत्। सुखदुःखक्रियायां। रस
 आस्थादनस्नेहनयोः। व्ययवित्रसमुत्सर्गे। अवव्ययत्। रूपरूपक्रियायां। रूपस्य दर्श
 ने। कारणं वा रूपक्रिया। छेदद्वेधीकरणे। अचिच्छेदत्। छेदअपवारण इत्येके। छेदयति।
 लाभने। अणगात्रविचूर्णने। वर्णवर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। वर्णक्रियाकर

विकारपरित्यागेन तेन उपेणवस्थानं कर्तुं प्रकृतिप्रकृतिकृतं न वदित्यर्थः ४

तिधा प्रमात्रं लिङ्गार्थः। लङ्गर्थस्तु विवक्षितः। तेनातिक्रामति। अश्वेनाति क्रामति अश्वयति। हास्तिनाति क्रामति हस्तयति। धातु रूपं च। णिच् प्रकृतिर्धातु रूपं प्रतिपद्यते च शब्देन कृतं स मुच्यते। तथा च वार्त्तिकं। आख्यानात्कृतस्तदा च होक्कल्लुक् प्रकृतिप्रत्यापत्तिः प्रकृतिवद्भुत्कारकमिति। कं सवधमाचक्षेकं संघातयति। इदं कं संहन् इति स्थिते। हनस्तो विप्लोः। हतेस्तकारो तादेशः स्याद्विप्लवर्जं णिति। ननु अत्रांग संज्ञा धातुसंज्ञा च कसविशिष्टस्य प्राप्ता ततश्च अद्वित्वयोर्देशः। किंच। कुत्वतत्वेन स्यातां। धातोः स्वरूपग्रहणे तत्प्रत्यये कार्यविधानात्। सत्यं। प्रकृतिवद्भुत्तिचकारो भिन्नकृतः कारकं च चात्कार्यं। हेतुमण्यिचः प्रकृतेर्हं न्यादेर्हेतुमणौ यादृशं कारकं धातावनीतं भूतं द्वितीयांतं यादृशं च कार्यं कुत्वतत्वादिति हीपीत्यर्थः। कं समजीयतत्। कर्तृक रणद्वयार्थः। कर्तुं व्यापारार्थं यत्करणं ननु चक्षुरादि मात्रमित्यर्थः। अस्मिनाहं

३६

तु वांचा विसर्गः तत्करोति गालो ज्यते। आहूयते। केचित्तु एचमेवा नुवर्त्तयन्ति। तन्म
 तपरस्मै परमाभा पुच्छादिषु धात्वर्थ इत्येव सिद्धं। एजंता देववज्र लवचना दात्मनेपद
 मत्तः। मास्ति पुच्छभां जेति एण्डि विः। सिद्धि शब्दे यथा ते मंगलार्थः। इतिवुरादिः। तत्प्रयो १४/५५
 जको हेतुश्च। कर्तुः प्रयोजकः हेतुसंज्ञः कर्तुं संज्ञश्च स्यात्। हेतुमति च। प्रयोजक व्यापारे प्रेषण
 दौ वाच्ये धातोर्णि च स्यात्। भवते त्रेरयुति भावयति। एचश्चुति कर्तुं शो फले आत्मनेपदं। भा
 वयते। भावयं बभूव। ओः पुज एजं परो। सनि परो यदंगं तदवयवम्। भ्यासो कारस्मेत्वं स्या
 त्पवर्गपण्जकारेष्ववर्णपरोः पुपरतः। अवी भवत्। अपी पवत्। मृज्। अमी भवत्। अ
 यीय वत्। अरीर वत्। अलील वत्। अजी जवत्। अवर्णपरो किं। वृभूषते। स्ववति मृतो १४/५६
 ति स्वति प्रवति स्रवति च्यवती नांवा। एषामभ्यासो कारस्य इत्वं वा स्यात्सनि अवर्ण
 परोः स्वदारे परो। असी स्रवत्। असु स्रवत्। नाज्जो पीति इत्स्वनिषेधः। अशशा सत्।
 अं कत्। अवीका सत्। मतांतरे। अचचका सत्। अज्जो पीति सुधातुप्रकरणे

३५
 ए०। धा० वीवर्णयति। कथां वर्णयति। विस्तृणातीत्यर्थः। ह्रीं वर्णयति। स्त्रीतीत्यर्थः। व
 हुलमिति निदर्शनं। अदंतधातुनिदर्शनमित्यर्थः। बाहुलकादन्येपि बोध्याः। तद्यथा। प
 र्णहरितभावे। अपपर्णत्। विष्कदर्शने। क्षपप्रेरणे। वसनिवासे। तुल्यश्रावणे। एवमा
 दोल्यति। प्रेरवाल्यति। विउंवयति। अवधीरयति इत्यादि। अन्येतुदशागणीपाठोव
 हुलमित्याहुः। तेनापठिता अपिसौलौकिकवैदिका बोध्याः। अपरेतुनवपठितेभ्योपि गणीप
 कवित्स्वार्थे एच। रामो राज्यमचीकरदिति यथेत्याहुः। चुरादिभ्यएव बहुलंगिजि
 त्यर्थः इत्यन्ये। सर्वपदाः प्राचां ग्रंथे स्थिताः। एणिङ्गान्निरसने। अंगवाचिनः प्रातिप
 दिकान्निरसनेर्थे एण्स्मात्। तस्मै निरस्पतिस्तयते। पादयते। श्वेताश्वाश्च। गा० लो० त३
 उ०। क०। का०। म०। श्व०। त०। क०। लो०। प०। श्व०। श्वेताश्वादीनां चतुर्णामश्वाद्यो लुप्यंते एण्डुधा
 त्यर्थे। श्वेताश्वा०। च०। ह्येतेनाति०। क्रामातिवा०। श्वेतयते। अ०। श्व०। त०। र०। मा०। च०। ह्ये०। अ०। श्व०। य०। ते। गा०। लो०। दि

७१२ ६३ ३२ ७१२ ६४

विटोः। रभेनुस्म्य। दचिन्नतुशबुलिटोः। लभेष्ट। अरंभत्। अललंभत्। हेरचरीतिसूत्रेऽचरीत्सु
कुत्वंत। अजीह्यत्। अत्सु हत्वं प्रथमदत्तुमापा असस्मरत्। अददत्। तपरत्वसामर्थ्या
त्रलघोर्नदीर्घः। विभाषविधिचेष्टोः। अभ्यासस्य अत्वं वा स्याच्चुरपरेणै। अववेष्टात्। अ
विवेष्टात्। अचवेष्टात्। अचिवेष्टात्। भर्जभासेत्यादिना बोधधादृखेः। अविभजत्। अवभा
जत्। काणादीनां वेति वक्तव्यं। एपेताः कणरणभणश्रणलुपहेठः काणादयः षड्भाषेउ
क्ताः। दाधिबाणि लोटिलोपयश्चत्वारो धिका न्यासे बाणि लोटि अप न्यत्र इत्येद्वादशा। अवी
कणत्। अचकाणत्। स्वापेष्टुडि। एपतस्य स्वपेष्टुडिः संप्रसारणे स्यात्। अस्तुपत्। शा
स्त्राद्वा व्योचैपां युक्तौ। प्रापयति। स्थापयति। कः संप्रसारणे। स न्यरेचरूपरेचणौ द्वेः संप्रसा
रणं स्यात्। अजृहवत्। अजृहावत्। लोपः पिवतेरीडाभ्यासस्य। पिवते रूपधाया लोपः स्या
दभ्यासस्य ईदंतादेशाश्च रूपापरेणै। अपीप्सत्। अर्तिङ्गीतिपुक्। अर्पयति। डेपयति। ब्रुप
यति। रपयति। मलोपः। क्रोमयति। स्थापयति। तिष्ठतेरित्। उपधायादरा

उदुपेयते। एतेनाशिच। पूर्वविप्रतिषेधादपवादत्वाद्वाहृदिं बाधित्वाणिलोपः। चोरय
 ति। ~~इति~~ तिङ्गत्वात्। दीर्घलघोः। नचाग्लोपित्वाँदौ ह्रस्वयोः रप्प संभवः। एषा कृतिनिर्देशा
 त् अचुचुरत्। एौचसंश्रुतः। सन्परेचङ्पेसणौ श्रुयतेः संप्रसारणं वा स्यात्। संप्रसारणं त
 दाश्रयं कार्यं बलवदिति वचनात्संप्रसारणं। पूर्वसूयं। अप्रतश्रवत्। अलघुत्वान्नदीर्घः।
 आशि श्रुयत्। स्तंभुं सिवुं सहांचङि। उपसर्गनिमित्तादिषां सस्पृशान स्याच्चङि। अवातस्तं
 भत्। पप्यं सीषिवत्। न्यसीषहत्। आटिटत्। आशि प्रात्। बहिरंगोप्यपधाङ्गस्वोदित्वा
 त्प्रागेव। ओणे ऋदिक्करणाल्लिंगात्। मा भवानिदिधत्। एजादावेधतो विधानान्न
 दृढिः। मा भवान्नेदिधत्। नन्दा इति नदराणां नदित्वं। औदिदत्। आदिजत्। आर्चिच
 त्। उब्रुआर्जवे। उपदेशेदकारोपधः। भुजन्मुञ्जौ पाण्युपतापयोरिति सूत्रे निपातना
 त्स्पवः। सचांतरंगोपि द्वित्वविषये नन्दा इति निषेधाज्जिषादृद्वित्वे कृते प्रवर्तते। न
 पुंततः प्राक्। दकारोच्चारणसामर्थ्यात्। औजीजत्। अजादेरित्येवानेह। अदिदपत्। रभेरा

६

६ ३ ४

णो। सुं डो भा पयते। भियो हेतु भयेषु क्। मी ई इ ती कारः प्राप्तिष्यते। ई कारां तस्मभियः पु क्स्या लो
 हेतु भये। मी ष्यते। नित्यं स्मयतेः। स्मयतेरे चो नित्यमा त्वं स्या लो हेतोः स्मये। जरिं वि स्मापय लो
 ने हेतौ षि ड्य स्मया वित्तु के नै ह। कुं चि कयै नं भाययति। वि स्मापयति। कथं तर्हि वि स्मापय
 न् वि स्मितमात्म हत्रा विति। मनुष्य वा चेति करण देव हि तत्र स्मयः। अन्यथा शान्तजपि
 स्यात्। सत्पं। वि स्मापयन्नि त्वे वपाट्ट नि सां प्रदायकाः। यद्वा मनुष्य वा क्यु यो ज्य कर्त्री वि
 स्मापयते तया सिं हो वि स्मापयन्नि ति एपं ता लो शां तेति व्याख्येयं। स्फा यो वः। लो। स्फा वयति। शर
 ७३५२ शदे रगतौ तः। शदे लौ तां ता देशः स्यान्नु गतौ। शान्तयति। गतौ तुगाः शान्तयति गो विहः। प्रत्यय
 न ६
 गमयतीत्यर्थः। रुहः पो न्य तर स्या। लो। रो पयति। रो हयति। क्री ड्जी तां लो। एषा मेव आत्वं
 स्या लो। का पयति। अध्यापयति। जा पयति। लो च सं सुं डो। सन्य रे च ड् परे चणा वि डो गा
 द्वा स्यात्। अधजी गपत्। अध्यापि पत्। सिं ध ते र पां र लौ कि के। रो ह लौ कि के र्ये विद्यु मा ७६
 नम् सध ते रे च आत्वं स्या लो। अन्नं सा धंति। निष्पादयतीत्यर्थः। अपार लौ कि के किं। ता

दादेष्टः स्याच्चुद्धपरेणै। अतिक्षिपत्। जिघ्रतेर्वा। अजिघ्रिपत्। अजिघ्रपत्। उर्जत्। अचीकृतत्।
 अचिकीर्तित्। अवीहनत्। अववर्तत्। अमीमृजत्। अममार्जत्। पातेर्णैलुग्वक्तव्यः। पुको।
 पवादः। पालयति। वाविधूननेजुक्। वातेर्जुक् स्यात्सौ कपेर्थे। वाजयति। कपेकिं। केशान्वा
 पयति। विभाषालीयतेः। लीलोनुंकलुकावेत्येतस्यां स्नेहविपात्तने। लीयतेलीतेषुक्
 मानुग्लुकावागमौ स्त्रोवाणौ स्नेह इवे। विलीनयति। विलापयति। विलालयति। वाचुतं।
 लीदिति ईकारप्रश्लेषात्। आत्वपदेनुग। स्नेह इवेकिं। लोहं विलापयति। प्रलभनाभिभ
 वपूजासुलियोनित्यमात्रमिति वाच्यं। लियः सम्माननशालिनीकरणयोश्च। लीज्
 नियोर्णेतयोरात्मनेपदं स्यात्कर्तृगोपिफले पूजाभिभवयोः प्रलभनेचार्थे। जटाभिलीप
 यते। पूजासधिगच्छतीत्यर्थः। प्रेपनोवर्तिकासुल्लापयते। अभिभवतीत्यर्थः। बालसुल्ला
 पयते। वंचयतीत्यर्थः। विभेतैर्तेनुभये। विभेतौ च आत्वं वा स्यात्प्रयोजकाद्भयं चेत्। भी
 स्योर्तेनुभये। आभ्यामात्मनेपदं स्याद्देतोश्चैद्वयस्मर्यौ। सूत्रेभयग्रहणं धात्वर्थोपलक्ष

विला
 पयति

१।३।६४

सि. ति.

त.

८०

पुनर्व.

तीय स्पेत्पस्प पवाद्या सन्नंते प्रवर्तते। ऐर्षियन्। ऐर्षिष्यन्। द्वितीय व्याख्यायां एीजंता बुजि षका
र एवाभ्यासे श्रुते ह्लादिशेषात्। द्वित्वं तु द्वितीय स्पे वा। तृतीयाभा वेन प्रकृत वार्त्तिका प्रवृत्तेः
। निवृत्त प्रेषणोद्घातोर्हं तुम लो सुद्धेन तु ल्योः। तेन प्रार्थयन्ति शरि नो न्यि तं प्रिया इत्यादि सि
द्धं। एवं सकर्मकैषूयं। इति एतत्प्रक्रिया। धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिष्टायां वा। इषिकर्म
णः इषिणैर्कर्तृकाद्घातोः सन् प्रत्ययो वा स्यात् इच्छायां। धातोर्विधेरिह सन आ ई धातुकत्वं
। इट्। द्वित्वं। सन्पतः। पठितुमिच्छति पिपठिषति। कर्मणः किं। गमनेनेच्छतीति करणान्माभूत्।
समानकर्तृकात्किं। शिष्याः पठन्ति तीच्छति गुरुः। वाग्रहणात्पक्षे वाक्यमपि। लुङ् सनोर्धस्त्व
एकाच उपदेश इति नेट्। सस्पतत्वं। अनुमिच्छति जिघत्सति। ईर्ष्यते स्तृतीय स्पेति मिसनोर्हि
त्वं। ईर्ष्यिषति। ईर्ष्यिषति। रुद विद मुञ्च ग्रहि स्वपि प्रह्वः संश्रु। एभ्यः संश्रुक्ताच कितौ
स्त्वः। रुदिषति। विविदिषति। मुमुषिषति। सनि यरि गुं होश्च। यहे गुं हे रुं ता बु सन इ एन स्या
त्। ग्रहि ज्येति संप्रसारणं। सनः सत्व स्यात् इषु भावः। जिघृक्षति। मुमुषति। किर सु पंचभ्यः। ह
सिद्धत्वा

८०

३

वा युयतिवा

पसः सिध्यति । तत्त्व निश्चिनोति तं प्रयति सेधयति ता पसं तपः । प्रजने वीर्यते । अस्वै च आत्वं
वा स्म लौ प्रजने र्ये । वा पयति गाः पुरो वानः । गभं ग्रा ह्यतीत्यर्थः । ऊ दुप धाया गो रः । गू हयति ।
दोषो लो । दुष इति सुबचं । दुष्यते रूप धाया ऊत्पा लौ । दुषयति । वचिन्न विरागो । विरागो प्री चित्रः
तत्ता चित्ने दूषयति दोषयति वा कामः । मितां दूष्यः । म्वा दौ चुरा दौ च मित उक्ताः । घटयति ।
जनी जृष । जनयति । जृष । जरयति । जृणा ते स्तु जा रयति । रंजै रौ मृग रमणे नलो पो वक्त
व्यः । मृग रमणमा खेटः । रजयति मृगात् । मृगेति किं । रंजयति पक्षिणः । रमणा दन्प त्रत् । रंज
यति मृगा नृत् ए दानेन । चुरादिषु क्षपादि श्विन्न । चि स्फुरो रौ । चपयति । चषयतीत्युक्ते ।
चिनो ते स्तु चाययति । स्फारयति । स्फोरयति । अपु स्फेरत् । अपु स्फुरत् । उभौ सांभ्या स
स्प । सांभ्या स स्या निते रुभौ नकारौ एत्वं प्राप्नुतो निमित्ते सति । प्राणि एत् । लौ गमिरवो
धने । इ एणो गमिः । स्या लौ । गमयति । वो धनेत् । प्रत्या ययति । । इ एव दिक् । अधिगमयति ।
हन स्तो चित्ता लो । हो हं ते रिति कुत्वं । घातयति । र्दूषयति । र्दूष्यते स्तृती यस्येति वक्तव्यं । तृ

चित्रः

इति वा
त्वम्

चापय
ति ४

तीय व्यंजनस्य । तृतीये काचरुति वर्धः । अष्टौषकारस्य द्वित्वं वारयतुम्
रंदितीवमरेदि

द्वित्वे ४

१ ३१ २६

द्विचोतिषिते २

जिगांसते। रलोऽपधाहलादेः संश्रु। उश्रुदश्रु वी। ते उपधेयस्य तस्माद्दलादेर्लंतात्परौच्चास
नौ सेटौ वाकिं। स्तः। द्युतिस्वाप्पोः संप्रसारणं। दिद्युतिषते। रुरुचिषते। रुरोचिषते। लि। लि। वि
षति। लिलेखिषति। रलः किं। दिदेविषति। व्यपधाकिं। विवर्तिषते। हलादेः किं। एषिषिष
ति। इरुनित्यमपि गुणेन बाध्यते। उपधाकायै हि द्वित्वात् प्रबलं। ओणे ऋदिक्करणस्य स
मान्तापेक्षज्ञापकात्। स नीवंतर्द्धभ्रंस्तर्द्धभृषिस्वयूणिभर्जपिसनां। इवेतेभ्य ऋधादि
भ्यश्च सनदृडा स्यात्। इडभावे। हलन्ताच्चेति कित्वं। कुरीति वस्य ऊङ्गण। द्वित्वे। दुद्युष
ति। दिदेविषति। तौति एपोरेवेति वक्ष्यमाणानियमां षः। सुसृषति। सिसेविषति। आ
प्रक्षुधामीत्। एषामच ईत्स्यात्सादौ सनि। अत्र लोपोभ्यां सस्य। सनि मीमेत्यारभ्य यङुक्तं
तत्राभ्यां सस्य लोपः स्यात्। आशुमिच्छति ईप्सति। अधितुमिच्छति। रपरत्वं। ईर्त्सति। अ
दिधिषति। विभ्रज्जिषति। विभ्रज्जिषति। विभ्रज्जति। दंभरश्च। दंभरच इत्स्यादी चुमादौ स
नि। अभ्यां सलोपः। हलन्ताच्चेत्यत्र हल् यरणं जातिपरमित्युक्तं। तेन सनः कित्वान्नलो

चत्तम
८१

[illegible]

५: धिष्मति। धीष्मति। दिदंभिषति। धीष्मिषति। धीष्मयिषति। उदो ह्य पूर्वस्य। मुखूर्धनि। मि
 स्वरिषति। युयुषति। यिय विषति। उर्लुनू षति। उर्लुनुविषति। उर्लुनविषति। नच परत्वा
 नुणा वा देशयोः सतोरभ्यासे उकारो न श्रूयेतेति वाच्यं। द्विर्वचने चीति सूत्रेण द्वित्वे क
 र्वयेत्या निरूपाति देशात्। आदेशानिषेधाद्वा। नच सन्नेतस्य द्वित्व प्रति कार्थित्वान्नि
 मिज्ञाता कथमिति वाच्यं। कार्यमनुभवन्ति कार्योनिमित्ततया नाश्रीयते नत्वननुभव
 न्नपि। नचेत्सन् द्वित्वमनुभवति। बुभूषति। विभरिषति। इपिपुगंतो मित्संज्ञकं प्रकारं
 श्रौरादिभ्यः। इडभावे। इको जलि इति कित्वान्न गुणः। अज्जनेति दीर्घः परत्वात्सिलोपे
 वाध्यते। आहपीति ईत्। इीष्मति। जिज्ञपयिषति। अमितस्तु जिज्ञापयिषति। जनसने
 निष्पात्त्वं। सिषासति। मिसनिषति। तनिपतिद रिज्ञातिभ्यः सनोवा इडाव्यः। तनोते विभाषा।
 ऊँ अस्पोपधाया दीर्घो वा स्याज्जलादौ सनि। तितांसति। तितंसति। तितनिषति। आशं
 कायां सन्त्र न व्यः। आमुमूर्षति। कूलं पिपतिषति। सनिमीमाधुरभलभशक पतप
 द

गवे ५-०३ सं ५६ १५९

न कति। उपसर्गात्। स्यादिष्वभ्यासेन वेति षत्वम्। परिषिषिहति। षाणि किं। तिष्ठा सति। सु
 ति। अभ्यासादित्युक्तेर्न ह निषेधः। इण्। प्रतीषि षति। इक्। अधीषि षति। सः। स्विदिस्वदि
 नाच। अभ्यासेणः परस्परपंतानामेषां सस्य स एव न षः षणिपो। सिस्वेदयि षति। सिस्वा
 षति। सिमाहयि षति। स्यादिष्वेवाभ्यासस्योति निष्प मा न्नेह। अभिस्सू ष ति। शौषिका
 तु वर्थिष्य चैषिको मतु वर्थिकः। सरूपप्रत्ययो नेष्टः सन्नंता न्न सनि ष्यते। शौषिका चै
 कः सरूपो न। तेन शालीये भव इति वाक्यमेव न तु च्छां ता च्छः। सरूपः किं। अहिच्छत्रे भवः
 हि च्छत्रः। आहिच्छत्रे भवः आहिच्छत्रीयः। अणता च्छः। तथा मतु र्थीत्सिन्ना। धनवान् या ५
 न। इह मतु वंता न्मतुन्। विरूपस्तस्या देव। दंडि मती शाला। सरूप इत्यनु ष ज्यते
 रासादुपपंतस्यार्थस्तेन इच्छा सन्नंतात्सन्ने। स्वार्थ सन्नंतात्तु स्या देव। जुगुप्सि ष
 ति षते। इति सन्ध क्रिया। धातो रेका चो हला देः क्रिया समभितो रेयङ्। पौनः पुन्यं ८३
 या समभितारः तस्मिन् द्योत्ये यद्ग स्यात्। गुणो यद्ग लुकोः। अभ्यासस्य

बोत रिवायिषति। लितावयिषति। जिजावयिषति। ७

रिषति। इह रिषाहस्पदित्वं। इह इति सनो वयः कार्यभा गिति कार्यलो निमि
गातृदिर्वचने वीतिन प्रवर्तते। अजिजिषति। अशिषिषति। उभौ साभ्या सस्य। प्राणि
उक्ते स्तुक्। चुत्वं। पूर्वत्रा सिद्धीय महि त्वे इति चच्छाभ्यां सहितस्ये टो द्वित्वं। हला
उक्ते षति। निमिन्नापाये नैमिन्निक् पाय इति त्वनित्पं। छोरिति सतुक् य हणाच्चा
प्रकृतिप्रत्याप निवचनाद्वा। लौच संसृजे रिति सूत्राभ्यामिजो गाद् सुयतेः संप्रसार
वा। अधिजिगा पायिषति। अध्यापि पायिषति। शिष्वा पायिषति। शुशा वयिषति। कः संप्रसा
जुतावयिषति। ओः पुय एज्यपरे। पिपा वयिषति। पुय एजीति किं। नुना वयिषति। अपरे किं।
षति। स्तृवतीतीत्वं वा। सिस्वा वयिषति। मुस्वा वयिषति। इत्यादि। अप र इत्येव। शुश्रूषते।
ति एपो रे वष एभ्या सात्। अ भ्या से एः परस्य स्त्रौति एपं तयोरे व सस्य षः स्यात्स भूते स
गन्प स्यात्तु षा षति। युति स्त्राप्पोरितु त्वं। मुष्वा पायिषति। सिषा धयिषति। स्त्रौति एपोः किं
इत्वा न्यागन्। आदि शो ने युक्तत्वा डुका द्वित्वं। पुस्फार षति। जुता वयिषति ४

४

पुस्फार विषतीति व्यवधानादोः
पुयलितिन १॥

पुस्फोरयिषति

पुस्फार विषतीति व्यवधानादोः
पुयलितिन १॥